Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ प्रदोष व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ ब्राह्मणी और राजकुमार ॥

प्रदोष की वारानुसार कई कथाएँ हैं। यहाँ सोम प्रदोष में सुनाई जाने वाली ब्राह्मणी और विदर्भ के राजकुमार की कथा का सरल रूप दिया गया है।

किसी नगर में एक ब्राह्मणी अपने पुत्र के साथ रहती थी। पति के निधन के बाद उसका जीवन कठिन हो गया। वह जो कुछ मिल जाता, उसी से अपने बेटे का पालन करती थी। फिर भी उसके मन में दया और शिव-पार्वती के प्रति श्रद्धा बनी रही।

एक दिन रास्ते में उसे एक असहाय बालक मिला। उसने उसे घर लाकर अपने पुत्र की तरह अपनाया। बाद में पता चला कि वह विदर्भ का राजकुमार है। पड़ोसी राजा के आक्रमण में उसके पिता का राज्य छिन गया था और बालक अकेला भटक रहा था।

ब्राह्मणी दोनों बच्चों की देखभाल करती और ऋषियों से मिली सीख के अनुसार प्रदोष के दिन शिव-पार्वती का पूजन करती। संध्या में वह दीप जलाकर सबके कल्याण की प्रार्थना करती थी। कठिनाई में भी उसने राजकुमार को आश्रय देना नहीं छोड़ा।

समय बीता। राजकुमार बड़ा हुआ। एक दिन उसकी मुलाकात अंशुमती नाम की गंधर्व कन्या से हुई। दोनों के परिवारों में परिचय हुआ और उनके विवाह की बात आगे बढ़ी।

॥ दया और आशा की सीख ॥

कथा के अनुसार अंशुमती के माता-पिता को स्वप्न में शिवजी का संकेत मिला और उन्होंने राजकुमार से उसका विवाह कराया। गंधर्वराज की सहायता से राजकुमार ने अपने पिता का खोया राज्य फिर प्राप्त किया।

राजकुमार ने उस ब्राह्मणी और उसके पुत्र का स्नेह नहीं भुलाया। उसने मित्र बने ब्राह्मण-पुत्र को सम्मानपूर्ण दायित्व दिया। ब्राह्मणी को यह देखकर संतोष हुआ कि संकट में दिया उसका सहारा व्यर्थ नहीं गया।

कथा का भाव

इस लोककथा में दया, आश्रय, धैर्य और शिवभक्ति को साथ रखा गया है। कथा के फल को धार्मिक विश्वास के रूप में पढ़ें; किसी की आर्थिक कठिनाई या बीमारी के लिए उसके व्रत न रखने को दोष न दें।

पाठ की परंपरा

पूजा के बाद अपने वार के प्रदोष की प्रचलित कथा पढ़ी जा सकती है। सोम, शनि और अन्य प्रदोषों की कथाएँ अलग मिलती हैं। घर या मंदिर की रीति के अनुसार पाठ करें और अंत में सबके मंगल की प्रार्थना करें।

॥ हर हर महादेव ॥